सितम्बर 2017

॥ओ३म्॥

मूल्य 10 रुपये

गुरुकुल आश्रम आमसेना की मासिक पत्रिका

कुलभूमि

स्वर्ण जयंती वर्ष 2017

समस्त देशवासियों को

२ अक्टूबर

महात्मा गांधी जी तथा

पं. लालबहादुर शास्त्री जी

के जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

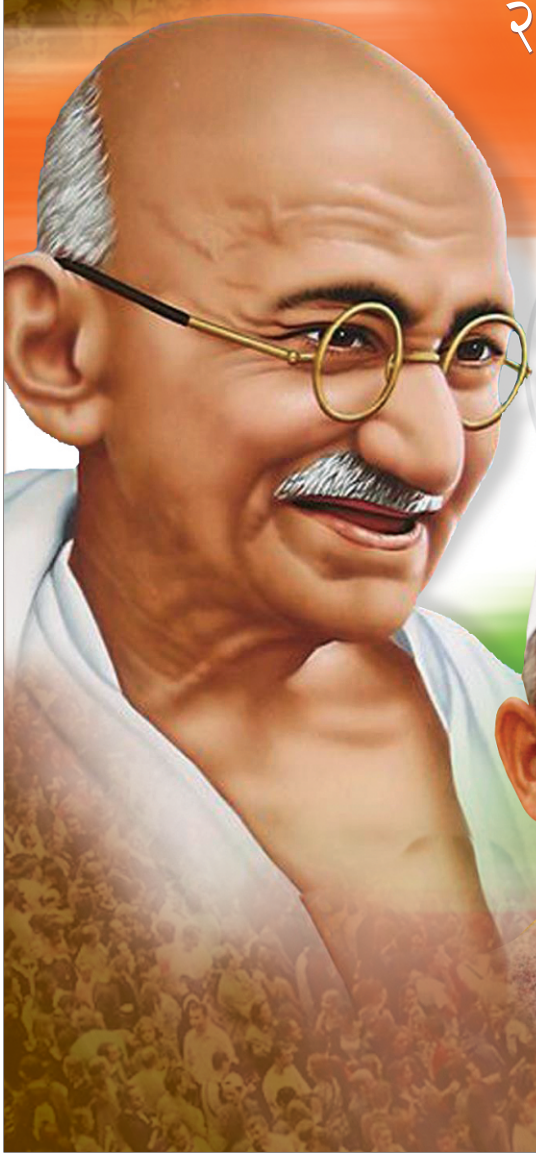

॥ओ३म्॥

गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का

निमंत्रण पत्र

आर्यों के तीर्थ स्थल एवं संस्कारों की रक्षा भूमि वैदिक धर्म का संदेश वाहक गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव **पौष शुक्ल पंचमी, षष्ठी, सप्तमी २०७४ तद्नुसार २३,२४,२५ दिसम्बर २०१७ शनि, रवि, सोमवार** को अति हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस शुभावसर पर गुरुकुल परिवार एवं ओड़िसा की आर्य जनता को विशेष रुप से आशीर्वाद देने तथा स्वर्ण जयन्ती की अध्यक्षता करने के लिये **योगर्षि पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज** एवं **आचार्य बालकृष्ण जी** पधार रहे हैं। विख्यात समाज सेवी **महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच** का भी आगमन हो रहा है। इस अवसर पर आप सभी आमंत्रित है।

इस शुभावसर पर आमंत्रित सन्यासीवृंद

पू.स्वा. प्रणवानन्द जी (दिल्ली)
पू.स्वा. धर्मेश्वरानन्द जी (उ.प्र.)
पू.स्वा. ब्रह्मानन्द जी (आन्ध्र.प्र.)
पू.स्वा. देवव्रत जी (प्र.आर्यवीर दल)
पू.स्वा. विवेकानन्द जी (मेरठ)
पू. महात्मा प्रतापपुरी जी (बाड़मेर)
पू.स्वा. धर्ममुनि जी (फलाहारी)
पू.वा. ब्रह्ममुनि जी (महाराष्ट्र)
पू.स्वा. विशुद्धानन्द जी (ओड़िसा)
पू.स्वा. आर्यवेश जी (हरियाणा)
पू.स्वा. अमृतानन्द जी (इटारसी)
पू.स्वा. ऋतस्पति जी (होशंगाबाद)
पू.स्वा. सुमेधानन्द जी (सांसद सीकर)
पू.स्वा. विवेकानन्द जी (रोजड़)
पू.स्वा. सौम्यानन्द जी (दिल्ली)
पू.स्वा. रामवेश जी (जीन्द)
पू.स्वा. अभेदानन्द जी (भुवनेश्वर)
डॉ. आनन्द स्वामी (उत्तरकाशी)

आमंत्रित प्रसिद्ध आर्य नेता –

श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र जी आर्य (अहमदाबाद)
(प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा दिल्ली)
श्री मिठाईलाल सिंह जी
(कुलपति गु.आमसेना)
(प्रधान मुम्बई आ.प्र.सभा)
श्री प्रो. विट्ठलराव जी आर्य (हैदराबाद)
(मंत्री सार्व. आ.प्र.सभा)
श्री मा. रामपाल जी आर्य
(प्रधान आ.प्र.सभा हरियाणा)
श्री शिवकुमार चौधरी
(अध्यक्ष छगमल ट्रस्ट इन्दौर)
श्री विनय जी आर्य
(महामंत्री दिल्ली आ.प्र.सभा)
श्री आचार्य अंशुदेव (प्र.आ.प्र.सभ छ.ग)
श्री पूनम जी सूरी
(अध्यक्ष डी.ए.वी ट्रस्ट)
प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह
(दिल्ली)
श्री दिनदयाल जी गुप्त (कोलकाता)
(प्रधान आर्य प्र.सभा बंगाल)
श्री अरुण अब्रोल जी
(मंत्री मुम्बई आ.प्र.सभा)
श्री सत्यवीर जी शास्त्री
(प्रधान आ.प्र.सभा महाराष्ट्र)
श्री आनन्द कुमार जी (कोलकत्ता)
श्री संगीत शर्मा (मंत्री)
आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई
श्री चन्द्रपाल जी राणा (बवाना)

आमंत्रित विद्वत्गण –

श्री प्रशस्यमित्र जी शास्त्री (उ.प्र.)
श्री आ. ज्ञानेश्वर जी (रोजड़)
श्री डॉ. महावीर जी अग्रवाल (महाराष्ट्र)
श्री धर्मपाल जी आर्य
(प्रधान दिल्ली आ.प्र.सभा)
श्री वेदव्रत शास्त्री (रोहतक)
श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी
(कुलपति गु.कांगड़ी)
श्री डॉ. महावीर जी मीमांसक (दिल्ली)
श्री डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई)
श्री आ. विजयपाल जी (झज्जर)
श्री डॉ. आनन्दकुमार जी
(पू.आई.जी दिल्ली)
श्री डॉ. कमलनारायण जी वेदाचार्य
(रायपुर)
इं. प्रियव्रत दास जी (भुवनेश्वर)

!! ओ३म् !!

कुलभूमिरियं वितरेज्जगते, सुमतिं विदुषामिहवेदविदाम्।
ऋषिभिश्चरितं महता तपसा, शुभं धर्मधिया सकलोन्नतिकृत।।

गुरुकुल आश्रम आमसेना का मासिक मुखपत्र

कुलभूमि

सितम्बर 2017 वर्ष - 40, अंक- 09 वि.सं. - 2074

सृष्टि संवत् - 1, 96,08,53,119, दयानन्दाब्द - 194

प्रतिष्ठाता

श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

संरक्षिका एवं प्रधाना

माता परमेश्वरी देवी

कुलपति

श्री मिठाईलाल सिंह जी

संरक्षक

श्री डॉ.पूर्णसिंह जी डबास

परामर्श दाता

श्री आचार्य सोमदेव जी शास्त्री
श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी

प्रधान सम्पादक

श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सम्पादक

श्री डॉ.कुञ्जदेव जी मनीषी

सह सम्पादक

कोमल कुमार आर्य
ब्र.मनुदेव वाग्मी

आदरी सम्पादक

श्री शरच्चन्द्र जी शास्त्री
सुश्री आचार्या पुष्पा ''वेदश्री''

सहयोगी

श्री जगदीश जी राय बंसल
श्री अवनी भूषण पुरंग जी
श्री राजेन्द्र जी धनखड़
श्री घनश्याम जी अग्रवाल
श्री जगदीश जी पसरीचा
श्री रोहित नरुला जी

व्यवस्थापक

ब्र. राकेश कुमार शास्त्री
ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

दक्षिण-पूर्व भारत में आर्यों के तीर्थस्थान, वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्य जगत में उच्चकोटि के विद्वान् एवं सेवक तैयार करने वाले महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना को अब स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस ५० वर्षीय अर्द्धशताब्दी पर गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में २३, २४, २५ दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा। गुरुकुल का यह समारोह सारे आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद एवं नया उत्साह देने वाला हो। इस पवित्र भावना को लेकर महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गई है।

आशा है श्रद्धालु जनों का पूर्ण उत्साह पूर्वक सहयोग एवं आशीर्वाद इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मिलेगा।

लेखों में दिये गये विचारों
के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

-: प्रकाशक एवं मुद्रक :-

गुरुकुल आश्रम आमसेना

व्हाया - खरियार रोड, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766107

Web - *WWW.Vedicgurukulamsena.com,* मो.नं. 9437070541/615,

Email-*aumgurukul@rediffmail.com 7873111213*

खाते का नाम : आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना

SBI [kfj;kj jksM [kkrk la[;k % 11276777048

IFSC Code : SBIN0007078

गुरुकुल को दिया गया दान में 80G के अन्तर्गत
आयकर मुक्त है ।

वेदोपदेशः

आचार्य कोमल कुमार

यस्मादृते न सिद्ध्यति यज्ञो विपश्चितश्चनः

स धीनां योगमिन्वति।

शब्दार्थ :- यस्मात् - जिस, **ऋते** - बिना, **न** - नहीं, **सिद्ध्यति** - सिद्ध होता है, **यज्ञ** - संसार रुपी कार्य, **विपश्चितः** - बुद्धिमान के, **चन** - कभी भी, **सः** - वह ईश्वर, **धीनाम्** - बुद्धि और कर्म के, **योगम्** - संयोग को, **इन्विति** - जानता है।

भावार्थ :- आज पूरे विश्व में विशेषकर पठित वर्ग में यह मान्यता बन गयी है और बनती जा रही है कि इस संसार का बनाने वाला कोई ईश्वर फीश्वर नहीं है। यह सब अपने आप बन गया है। जैसे कि जंगल में वृक्ष वनस्पति, औषधि आदि अपने आप उत्पन्न हो जाते हैं, वैसे ही यह पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह-उपग्रह नक्षत्र आदि पदार्थ अपने आप बनते हैं, चलते हैं और नष्ट होते हैं, इनको बनाने, चलाने के लिए किसी ईश्वर नामक कर्त्ता की अपेक्षा नहीं है। यदि कोई ईश्वर होता तो अवश्य दिखाई देता। इस प्रकार की नास्तिकता की भावना दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।

वेद कहता है कोई भी वस्तु चाहे छोटी भी क्यों न हो बिना किसी कर्त्ता के नहीं बनती। **'कारण अभवात् कार्य-अभावः (वै.१/२/९)'** अर्थात् बिना कारण के, बिना कर्त्ता के कोई भी कार्य-वस्तु बनती नहीं है। जैसे कि पेन, घड़ी, टी.वी., कार, विमानादि। वैदिक सिद्धान्त है "Nothing is automatic/ bychance in this univrything is made by itscreator" कुछ लोग इस संसार को अपने आप बनने-बिगड़ने वाला मानते हैं तो कुछ आकस्मिक बन जाने वाला मानते हैं। ये सिद्धान्त भी नितान्त असत्य हैं।

नास्तिकता की आंधी सभ्य, शिक्षित, समाज के व्यक्तियों में भी आज इतनी विस्तृत होती जा रही है कि चाहे वे मुख से कहे नहीं किन्तु मानसिकता यही बनी है कि ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं है बल्कि पाश्चात्य जगत् के कुछ बुद्धिमानों ने यहां तक कह डाला कि ''आज विज्ञान के युग में ईश्वर की मृत्यु की मृत्यु हो गयी है।''

संपादकीय ....अवतारवाद और मूर्ति पूजा देश के पतन का मुख्यकारण

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

इस समय हमारे देश में सर्वत्र राम रहीम के कारनामों की चर्चा हो रही है। उनको एवं उनके साथियों को खोज-खोजकर दण्डित किया जा रहा है इससे पहले संत रामपाल के साथ भी यही हुआ। संत रामपाल से पहले अहमदाबाद के तथा कथित संत आशाराम सहित ये तीनों ही तथा कथित भगवान देश के लाखों मनुष्यों के पूजनीय थे। सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी एवं मंत्री भी इन तीनों ही तथा कथित संतो के चरणों में दण्डोतकर आशीर्वाद लेना अपना सौभाग्य मानते थे।

देश की जनता भी जो राजनेता मंत्री आदि इनके पास जाकर इनके चरणों में लेटकर अपना आशीर्वाद लेते थे उन्हीं को अच्छा मानती थी।

रामरहीम के पाखण्ड के खुलने से १५ दिन पहले ही हरियाणा के मुख्यमंत्री उनके आश्रम में जाकर आशीर्वाद लेकर ५१ लाख रुपये की सहयोग देने की घोषणा करके आये थे। जबकि पहले ही रामरहीम के पास करोड़ों, अरबों रुपये की सम्पत्ति है, धन सम्पत्ति के सीमा से पार बढ़ने पर रामरहीम अपने पथ से विचलित हो गया। अपने कार्य, एवं उद्देश्य को भूल गया। पहले इसके सेवा परोपकार कार्य आदि तथा लाखों लोगों को संयम एवं साधना का उपदेश बहुत प्रभावशाली काम कर रहा था। हजारों लोगों का जीवन इसके उपदेश से सुधर रहा था। तब सरकार या किसी भी समाज सेवी संस्था में इसके कार्यों पर दृष्टिपात नहीं किया। हजारों लोग इसके विरुद्ध पुलिस थानों में रिपोर्ट कर रहे थे। तब किसी भी पुलिस अधिकारी ने उसके कार्यों को जांच करना उचित नहीं समझा, इसका मुख्य कारण इन बाबाओं के झूठे सराप से डरना। जबकि वे भी हमारे जैसे सामान्य मनुष्य हैं। वे सामान्य गृहस्थी हैं उनके संतान है, इन सभी के आश्रमों में धन सम्पत्ति इकट्ठा करने के लिए सभी प्रकार के तिकडम् होती हैं। इनके अंतरंग सहयोगी इनके ठगी एवं कार्यों को हेराफेरी को इनके आज्ञा से ही अंजाम देते है। कई पुलिस अधिकारी तथा अन्य अधिकारी इन बातों को जानते हुए भी अनजान बन जाते है। जब उनके कुकर्मों का

फल सामने आता है। फिर भी कोई-कोई अधिकारी और कोई बुद्धिमान व्यक्ति यह विश्वास करते हैं कि इन महात्माओं में कुछ विशेष शक्ति है जिसके कारण इतनी बड़ी सम्पत्ति के अधिकारी बन गए।

अस्तु! सारांश में विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि अब भी कोई कितना पढ़ा लिखा व्यक्ति हो विशेषकर बाबाओं के पाखण्ड भरी बातों को विश्वास कर लेता है। इस दोष का मुख्य कारण है ऋषि मुनियों के या आर्ष ग्रंथों, साधु महात्माओं की बातों पर विश्वास न करना। ऋषि मुनियों के लिखे ग्रंथ उपनिषद, दर्शनशास्त्र तथा वैदिक धर्म से दूर रहना।

वैदिक धर्म के स्थायी बुद्धिगम्य बातों पर विश्वास न करना। अत: जो सज्जन देश में होने वाले ढगों के घटनाओं से अपने को अपने समाज को बचाना चाहते है वे आर्य समाज से जुड़े। वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी के ग्रंथों का गम्भीरता से स्वाध्याय करें।

भजन

दिन एक से हमेशा रहते नहीं किसी के।
बादल घिरे हुए है याश और बेवशी के
आते नहीं नजर कुछ आसार जिन्दगी के
इनती उम्मीद पर बस अब दम अटक रहा है
दिन एक से हमेशा रहते नहीं किसी के
बिगड़ी में कोई साथी होता नहीं किसी का
मशहूर है जहां मे सब यार है बनी के
हम को तो कौम के गम से नहीं है फुरसत
हों आपको मुबारिक सामान न दिल्लगी के
नफरत है इस कदर क्यों आपस में हिन्दुओं को
आखीर तो है यह दाने सब एक ही फली के।
हरसाई बनके रहना अच्छा नहीं किसी को
या तो किसी को करना या हो रही किसी के
कल पर न टाल जो कुछ करना है आजकर लो
बैठा है क्यों मुसाफिर दिन है चला चली के।।

ब्र. मिथलेश आर्य

ओ३म्
मातृकल्याण वटी
स्त्रियों के श्वेत एवं रक्त प्रदर, अनियमित मासिक स्राव, कटीशूल, गर्भाशय की कमजोरी, हाथ पांव की जलन से उपयोगी है।
Mfg. Lice. No. : O.R.78 Ayur.
Net. Wt. :
Batch. No. :
Mfg. Date :
M.R.P. :
प्रा.भा.वि. सभा गुरुकुल आमसेना, नवापारा (ओडिशा)

ओ३म्
सितोपलादि चूर्ण
यह चूर्ण खांसी, जुकाम, क्षय, पुराने ज्वर एवं पाचन की गड़बड़ी में बहुत उपयोगी है।
सेवन विधि :
2 से 4 ग्राम शहद या घी से प्रयोग करें।
Mfg. Lice. No.: O.R.78 Ayur.
Net. Wt. :
Batch. No. :
Mfg. Date :
M.R.P. :
प्रा.भा.वि. सभा गुरुकुल आमसेना, नवापारा (ओडिशा)

दीपावली और महर्षि दयानन्द

ब्र. विकास कुमार आर्य

यह दीपावली प्राचीनतम पर्व है, कल्प शास्त्रों में उसको शारदीय नवसस्येष्टि कहा गया है। अर्थात इसी दिन घर की लिपाई पोताई करके श्रावणी के नई फसल धान, चावल, मुंग, उड़द आदि अन्नों से यज्ञ करके फिर इन अन्नों का प्रयोग किया जाता था। इस शारदीय नवसस्येष्टि का नाम कालान्तर में दीवाली या दीपावली हो गया। देश विदेश में इस पर्व को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। समय-समय पर इस पर्व के साथ बहुत सी किं बदन्तियां जुड़ती गई इनमें सबसे प्रसिद्ध और प्रचलित कल्पना है, कि दशहरे को श्रीराम जी ने रावण का वध किया था तथा दीपावली के दिन वनवास से वापिस लौटकर आये थे, अत: इसी दिन श्री रामजी का राज तिलक हुआ था। परन्तु बाल्मिकि रामायण किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ में ऐसा नहीं लिखा है। श्रीराम जी तो चैत्र शुल्क पचंमी को वापिस अयोध्या लौटकर आये थे। चैत्र एवं अमावस्या के दिन श्रीराम जी ने रावण का वध किया था।

आर्यों के लिए इस दीपावली का महत्व इसीलिए भी है वैदिक धर्म के उद्धारक लुप्त एवं विस्मृत संस्कृति को पुन: जनता जनार्दन के समाने उपस्थित करके एवं अनेक पाखण्डों एवं कुरीतियों से देश वासियों को बचाया था। भारतीय संस्कृति को नाश करने वाली मूर्ति पूजा एवं पाखण्ड का खण्डन कर सच्चे वैदिक धर्म का मार्ग दिलाया था। फल स्वरुप मूर्ति पूजा से स्वार्थ की पूर्ति करने वाले मूर्ति पूजा की आडबंर से भोग बिलास में फसे पाखण्डियों का खण्डन कर देश की जनता को वेद का सच्चा मार्ग दिलाया था। अत: मूर्ति पूजा एवं मन्दिर से अपने स्वार्थ की सिद्धि करने वाले तथाकथित महन्तों एवं पुजारियों ने षड़यन्त्र करके सोलह बार जहर खिलवाया। अन्त में जोधपुर में नन्हें बाई नामक वेश्या को माध्यम बनाकर दूध में संखिया जैसे भयंकर विष को पिला दिया, इससे ऋषि की आतें छलनी छलनी हो गई। उन्होंने ३० अक्तूबर १८८३ के दिन इस भौतिक शरीर को छोड़कर भगवान की शरण में चले गये।

ऋषि उवाच

देखो! ईश्वर की पूर्ण दया तो यह है कि जिसने सब जीवों के प्रयोजन सिद्ध होने के अर्थ जगत् में सकल पदार्थ उत्पन्न करके दान दे रखे हैं। इससे भिन्न दूसरी बड़ी दया कौन सी है? अब न्याय का फल प्रत्यक्ष दिखता है कि सुख दु:ख की व्यवस्था अधिक और न्यूनता से फल को प्रकाशित कर रही है इन दोनों का इतना ही भेद है कि जो मन में सबको सुख होने और दु:ख छूटने की इच्छा और क्रिया करना है और बाह्य चेष्टा अर्थात् बंधन छेदनादि यथावत् दण्ड देना न्याय कहाता है। दोनों का एक प्रयोजन है कि सब पाप और दु:खों से पृथक् कर देना।

वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

शास्त्र चर्चा

कु. निशा आर्या

नित्यो धर्म सुखदु:खे त्वनित्ये, जीवोनित्यो हेतुरस्य त्वनित्य:।
त्वम्त्वानित्यं प्रतितिष्ठस्व नित्ये, संतुष्यत्वं तोषपरो हि लाभ।।

भावार्थ :- हे राजन! इस नश्वर विश्व में केवल धर्म ही नित्य है, क्योंकि यह संसार बनकर बीज रुप से जीवात्मा में व्याप्त हो जाता है। इस विश्व के सुख-दु:ख तो आने जाने वाले अनित्य भाव हैं। जीवात्मा नित्य है। इसका नाश नही होता, किन्तु इसके सभी भौतिक साधन जैसे शरीर एवं इस शरीर की अन्य उपलब्धिया अनित्य है। तुम अनित्य को त्याग कर नित्य रुपि में लिप्त होकर सन्तुष्टि प्राप्त करो क्योंकि संतोष ही वास्तविक सुख है।

महाबलान पश्य महानुभावान, प्रंशास्य भूमि धनधान्य पूर्णम्।
राज्यानिहित्वा विपुलांश्चभोगान्, गतान्नरेन्द्रात् वशमंत कस्य।।

भावार्थ :- हे राजन्! तुम उन चक्रवर्ती महाबली सम्राट के जीवन पर दृष्टिपात करो, जो इस पृथ्वी के विशाल भाग पर शासन करते हुए भी उन भोगों एवं प्रभुत्व को शाश्वत् नहीं रख सके और सब कुछ यहीं छोड़कर मृत्यु के मुख में चले गए। इस नश्वर विश्व में कोई भी भोग, यश, प्रतिष्ठा और प्रमुख स्थायी रही है, न ही यह मृत्यु के बाद साथ ना जाता है। एक दिन तुम्हें भी इस समस्त प्रभुत्व और भोगों को यही छोड़कर जाना होगा। धृतराष्ट्र। फिर इस अल्प कालीन अनित्य सुखों के कारण अपने धैर्य का परित्याग क्यों करते हो?

यो धर्ममर्थं कामं च यथाकालं निषेवते।
धर्मार्थ कामसंयोगं सोऽमुत्रेह च विंदति।।

भावार्थ :- हे राजन्! जो धर्म, काम, अर्थ का समयानुसार सेवन करता है वह इस लोक में और परलोक में भी इनके संयोग को प्राप्त करता है। वैदिक संस्कृति में गृहस्थों को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति का उपदेश दिया गया है। इसमें कहा गया है कि मनुष्य को इन सबका सेवन यथा समय आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। इसमें धन, प्रभुत्व एवं ऐश्वर्य या काम

को बर्जित नहीं किया गया है, अपितु यह कहा गया है कि समयानुसार इनका सेवन करना चाहिए। व्यर्थ में इनका चिन्तन करते हुए दु:खी नहीं होना चाहिए।

अर्थ सिद्धिं परामिच्छन् धर्ममेवादितश्चरेत।

न हि धर्मादयैत्यर्थः स्वर्ग लोकादिवामृतम्।।

भावार्थ :- जो व्यक्ति इन चारों की सिद्धि चाहता है, उसे सर्वप्रथम धर्म का मार्ग ही अपनाना चाहिए, क्योंकि धर्म से ही अर्थ की प्राप्ति होता है। अर्थ से ही कामना पूर्ण करने की शक्ति प्राप्त होती है। धर्म-अर्थ को उसी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता, जिस प्रकार स्वर्ग से अमृत को अलग नहीं किया जा सकता।

इदं च त्वां सर्व परं ब्रवीमि, पुण्यं पदतात महाविशिष्टम्।

न जातु कामा नभयान्न लोभात्, धर्म जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः।।

भावार्थ :- धर्म का परित्याग कभी नहीं करना चाहिए। उस स्थिति में भी नहीं, जब इसके पालन से प्राणों का संकट उत्पन्न हो जाए। यह सत्य भी है पत्थर टुकड़े-टुकड़े होकर भी अपनी कठोरता के धर्म का परित्याग नहीं करता। नीम का फल पेड़ से गिर कर भी अपनी तिक्तता नहीं छोड़ता, आम पेड़ से गिरकर कौवे द्वारा गोदे जाने पर भी अपने रस की मिठास का त्याग नहीं करते है फिर मनुष्य अपना धर्म त्याग दे, तो वह मनुष्य कहलाने योग्य ही नहीं रहता है।

उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें:-

01. सत्यार्थ प्रकाश	- 40.00	07. विष चिकित्सा	- 30. 00
02. खिलते फूल	- 8.00	08. कन्या और ब्रह्मचर्य	- 05.00
03. गीत कुञ्ज	- 10.00	09. ईश्वर कहां है ?	- 10.00
04. सच्चा सुखी कौन	- 10.00	10. सच्चा धर्म	- 05.00
05. विचित्र ब्रह्मचारी	- 05.00	11. दैनिक उपासना	- 10.00
06. वैदिकधर्म प्रश्नोत्तरी	- 15.00	12. योगासन एवं प्राणायाम	- 25.00

स्वास्थ्य जगत् ...

खांसी का आसान इलाज

उमेशचन्द्र मनस्वी

सेंधा नमक (लाहौरी, पाकिस्तानी नामक) की एक सौ ग्राम जितनी डली खरीद कर घर में रख लें। जब भी किसी को खांसी हो, इस सेंधा नमक की डली को, चिमटे से पकड़ कर आग पर, गैस पर या तवे पर अच्छी तरह गर्म कर लें। जब लाल होने लगे तब गर्म डली को तुरन्त आधा कप पानी में डुबो कर निकाल लें और नमकीन गर्म पानी को एक ही बार में पी जाएं। ऐसा नमकीन पानी सोते समय लगातार दो-तीन दिन पीने से खांसी, विशेषकर बलगमी खांसी को पूर्ण आराम आ जाता है।

विशेष :- १. एक बार काम लेलेने के बाद नमक की डली को सुखा कर दें। इस प्रकार इसे बार-बार काम में लिया जा सकता है।

२. इसी से मिलता-जुलता एक अन्य प्रयोग इस प्रकार है- एक ग्राम सेंधा नमक और पानी १२५ ग्राम को गर्म तवे पर छमक दें। आधा रहे तब पी ले। सुबह-शाम पीने से खासी कुछ ही दिन में मिट जाएगी।

३. बहुत अधिक रक्तचाप के रोगी को यह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार की खांसी :- पीपर छोटी एक भाग, बहेड़ा दो भाग (दुगुनी मात्रा का) चूर्ण, शहद या मिश्री की चासनी से चाटने से सभी प्रकार की खांसी मिटती है।

लेने का विधि :- एक रत्ती (एक चुटकी) पीपर और दो रत्ती (दो चुटकी) बहेड़ा का चूर्ण एक चम्मच शहद या मिश्री की चासनी में मिलाकर दिन में दो बार प्रातः सायं लें या केवल सुबह-सुबह खाली पेट सात दिन तक लें।

खांसी का सरल इलाज :- थोड़ी पीसी हुई हल्दी (२ ग्राम) व थोड़ी चीनी को कटोरी में डालकर थोड़े से पानी में घोलकर गर्म करें और बीमार को पिला दें। अवश्य उसी समय लाभ प्रतीत होगा।

विशेष :- १. आवश्यकतानुसार सोते समय दो-तीन दिन लें। २. हल्दी चूर्ण व चीनी की फक्की के रुप में भी थोड़े गर्म पानी से ले सकते हैं। **स्वदेशी चिकित्सा से साभार**

बाल संसार

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आज सायंकाल महात्मा चैतन्य मुनि की कुटिया के बाहर कुछ श्रद्धालु सज्जन शंका समाधान के लिए आकर बैठ गए। जब स्वामी चैतन्य मुनि जी ने देखा की कई श्रद्धालु सज्जन आकर बैठ गए तो वे भी अपनी कुटिया से बाहर आकर अपने आसन पर विराजमान हो गए। स्वामी जी ने कहा आप लोगों की श्रद्धा धर्म के प्रति बढ़ रही हैं। वास्तव में मनुष्य वही हैं जों आगे पीछे का कार्य सोच विचारकर करें।

आजकल धर्म के नाम पर पाखण्ड एवं ठगी बढ़ती जा रही हैं, इस बात पर भी आपके विचार करना चाहिए।

विनय मुनि को स्वामी जी का उपदेश सुनकर खड़े होकर पूछा कि स्वामी जी धर्म तो बहुत अच्छी चीज हैं। धर्म के दस लक्षणों में मानव जीवन को सुन्दर बनाने का नियम है। धर्म का उद्देश्य हैं मनुष्य को पशुत्व से ऊपर उठाना हैं फिर धर्म के नाम पर कुछ श्रद्धालु व्यक्ति इन पाखण्डियों के आडम्बर में कैसे फँसतें हैं? जीन व्यक्तियों को लाखों लाख व्यक्ति अपना धर्म गुरू एवं प्रेरक मानते हैं,वे व्यक्ति ही ऐसी चरित्रहीनता की बाते कैसे कर देते हैं? जिन बातों को सुनकर सामान्य व्यक्ति का सिर भी झुक जाता हैं।

स्वामी चैतन्य मुनि–श्रद्धालु सज्जनों। हमारे प्राचीन धर्म शास्त्रों में चार वर्णो का वर्णन हैं। जैसे ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र। इन चारों वर्णो में ब्राम्हणों को सिर तुल्य कहा गया हैं। उपदेशक एवं अध्यापकों कों ब्राम्हण माना जाता हैं , परन्तु जब ब्राम्हण ही धर्महीन उच्छृकल हों जाए उसका शासन क्षत्रिय करता हैं, क्षत्रिय अर्थात् राजा शासक परन्तु जब यें क्षत्रिय भी ब्राम्हण कों सब कुछ मान लेते हैं। ये सभी साधु सन्त भी ब्राम्हण वर्ग में आते हैं। ये साधु सन्त अपनें कों भगवान तुल्य सिद्ध करके शासकीय (क्षत्रिय) अधिकारियों को भी घुमा फिराकर अपने वश में कर लेते हैं।

आज कल के अंग्रेजी पढ़े लिखे अधिकारी धर्म विषय में विचार शून्य होते हैं। ये पाखण्डी साधु जैसे कहते हैं वैसे विश्वास

कर लेते हैं, उनको सब सुविधाए दे देते हैं। उनके विरोध जनता की शिकायतों को भी नहीं सुनते, शिकायत करने वालों को ही धमका देते हैं। ये तथा कथित सन्त नाना प्रकार के पाखण्ड करके करोड़ों रूपयों को इकट्ठा कर लेते हैं। विचारी जनता उनके एक आदेश पर ही लाखों -लाखों रूपया सौप देती हैं। वे कही शाप देने से डरकर तो कही पैसे के बल पर शासकिय अधिकारियों को अपने वश में कर लेते हैं ,फिर अपने आश्रम में चरित्र हीनता की सीमा पार कर लेते हैं। अपनी रक्षा के लिए मूर्ख युवको को पैसा देकर रक्षक बना लेते हैं। वे अल्प पठित मूर्ख सैनिक कुछ पैसे के लोभ में तथा मुछ आशीर्वाद के लोभ में इन बाबाओं को मनमानी करने देते हैं।

हरियाणा के सन्त रामपाल एवं रामरहीम ने यही किया। अब ये दोनों जेल के सीकजों में हैं। ये सब हुआ हाईकोर्ट के आदेश से। हरियाणा सरकार के मन्त्री तों इससे डरते थे क्योंकि प्राय: सभी मन्त्री विधायक और अधिकारी इनके आगे नतमस्तक होते थे। यह सब ठगी के धन्धे, सच्चे धर्म के लक्षणों को न समझने से होते हैं।

अत: हमारे शासक वर्ग को अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए, कर्तव्य,अकर्तव्य, धर्म, अधर्म को अच्छी प्रकार समझना चाहिए। मनु जी ने धर्म का सारगर्भित लक्षण लिखा हैं:-

वेद: स्मृति सदाचार: स्वस्य च प्रियमात्मन:।
एतत चतुर्विधं प्राहु साक्षात धर्मस्य लक्षणम्।।

अर्थात :- भगवान की दीव्यवाणी चारों वेद वेदानुकुल बनाए हुए ऋषि मुनियों के ग्रन्थ, दर्शनशास्त्र, उपनिषद मनुस्मृति आदि ग्रन्थ समय समय पर पैदा हुए महात्माओं की उपदेशों एवं पुस्तकों को पढ़कर इन सब ग्रन्थों से प्रेरणा लेनी चाहिए। प्राचीन ऋषि मुनि की बात छोड़ दे तो मध्यकाल की महापुरूषों द्वारा रचित बुद्धिगम्य ग्रन्थों को पढ़ने सेभी मनुष्य प्रेरणा ले सकता हैं। धर्म का सर्वमान्य साधारण नियमानुसार शिक्षित अशिक्षित सभी व्यक्ति धर्म के रहस्यों कों समझ सकते हैं। जैसे **''स्वस्य च प्रियमात्मन''** अर्थात् हमारी आत्मा जिसकों अच्छा माने वह धर्म,जिसके मानने में भय, शंका, लज्जा, लगें वह अधर्म। जैसे-कोई व्यक्ति हमारे वस्तु को चोरी करता हैं तों हमें दु:ख

मित्र उवाच

जो गृहस्थी जीवन में एवं परिवार में सुख शान्ति चाहता है वह समाज का भी भला करना चाहता है ऐसे व्यक्ति को सदा मन को वश में रखते हुए अपना एवं समाज का हित विचार करके कार्य करना चाहिए।

चौ. मित्रसेन जी आर्य

लगता हैंअत: हमें इस सिद्धान्त से ठस बात समझना चाहिए की हम भी किसी की वस्तु कों चोरी न करें, किसी को झूठ बोलकर न ठगे। इस प्रकार यदि कोई कहता हैं की हनुमान जी ने अंगूली से सूर्य के टुकड़े कर दिए, संजीवनी खोजने सारे पर्वत को उठा लाए या श्री कृष्ण भगवान् ने गोवर्धन पर्वत को हाथ में उठा लिया इन सब कार्यों को करना असंभव हैं। अत: ऐसी असंभव बाते पर विश्वास नहीं करना चाहिए। तथा कथित संत असंभव बाते कह कर अपनी ठगी के कारनामों को दिखाकर भोली भाली जनता को ठगते हैं। विचारहीन अच्छे पढ़े लिखे बातों को इनके असंभव बातों को विश्वास करते हैं। तथा जनता के धन को लूटने देते हैं। सुशील-महात्मा जी फिर भी हम इन ठगी के बातों से कैसे बचें।

स्वामी चैतन्यमुनि :- भौतिक विज्ञान शास्त्र पढ़ना अलग बात हैं। परन्तु इन सब बातों को बुद्धि से परीक्षा करना दूसरी बात हैं। हमारे प्राचीन धर्म शास्त्रों में ही यह सच्चा कार्य दिखलाया हैं। इस सच्चे मार्ग दिखलाने वाले युगपुरूष महर्षि दयानन्द जी हुए हैं। जिन्होने पाखण्डों को खण्डन करने के कारण 16 बार जहर पीना पड़ा था। अन्त में जोधपुर के कुछ कुटिलों के षड्यन्त्र से ऋषि कों हलाहल या संखिया विष दूध में ऋषि को पिलाया। उस संखिया नें ऋषि के आन्तों को छलनी कर दिया। फलस्वरूप 3० अक्टूबर 1883 को उनका निधन हो गया। ऋषि के बलिदान से हमें शिक्षा लेकर उनके बताए मार्ग में चलकर अपनें जीवन को बनाने का यत्न करना चाहिए।

⊙⊙⊙

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में स्नातक परिचय

श्री चन्द्रशेखर शास्त्री :-आपका जन्म १.१.१९६७ को रायपुर जिले के बसीना नाम ग्राम में श्री देवराम वर्मा जी के घर हुआ। ७.८.७७ को इस गुरुकुल की फैलती ख्याति से प्रभावित हो आपके पिता जी ने प्रवेश करा दिया। आप अपने समय के मेधावी छात्रों में आपकी गिनती है, आपकी बुद्धि प्रखर है। आप इस गुरुकुल के प्रसिद्ध विद्वान् स्नातकों में से हैं। गुरुकुल में मध्यमा एवं शास्त्री उत्तीर्ण कर रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर से एम.ए. प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान पर रहे।

आप प्रतिभाशाली दृढ़ संकल्पी कर्मठ व्यक्ति के धनी, प्रतिष्ठित विद्वान् तथा उच्चकोटि के वक्ता भी हैं। वर्तमान में आप दिल्ली की आर्यसमाज विकासपुरी में धर्माचार्य पद पर कार्य कर रहे हैं। आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपने दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। आपने कई कैसेट भी तैयार की हैं। आप प्रसिद्ध कथाकार के रूप में जाने जाते हैं।

श्री विद्यावन्धु शास्त्री :- आपका जन्म बिहार प्रान्त के गुमला जिले के सिमडेगा नामक शहर में दिनांक ५.४.१९६४ को हुआ। पिता का नाम श्री नवीनकिशोर तथा माता का नाम श्रीमती चम्पादेवी है। कक्षा पांचपी पास करने के उपरान्त शहर से दूर किसी अच्छे शैक्षणिक संस्था में विद्याध्ययन की जिज्ञासा अपने मन में संजोये स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा संचालित महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना में उन्हीं के गुरुभाई पं. देशपाल जी दीक्षित के साथ १९७७ में गुरुकुल पहुंचे। यहाँ शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण कर सन् १९८८ में रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तदन्तर ७.१.१९८९ से महाविद्यालय सिमडेगा में संस्कृत व्याख्याता पद पर अध्यापन कार्य कर रहे हैं। मेधावी एवं श्रद्धालु स्नातकों में हैं, अध्ययन के साथ मशीनरी एवं आयुर्वेद में भी अच्छी रुची रही है।

श्री पुरन्दर शास्त्री :-आपके पितृव्य श्री आचार्य अखिलेश जी ने आपको ५.५.७६ को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। आपका जन्म १.१०.६५ को बलांगीर जिला के मायाबर्हा नामक ग्राम में हुआ था। आप पढ़ाई-लिखाई में अच्छे थे, आपने इस गुरुकुल में शास्त्री तक शिक्षा प्राप्त की पश्चात् गुरुकुल में अध्यापन कार्य करते हुए रविशंकर विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा योग्यतापूर्ण अंको से उत्तीर्ण की।

आप बहुत सीधे साधे स्वावलम्बी हैं। आप संस्कृत के एक अच्छे विद्वान् हैं। इस समय नवापारा जिला के तरबोड़ हाईस्कूल में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। अब समाज सेवा और शैक्षणिक कार्य में लगे हुए हैं। **क्रमशः**

महिला जगत् ...

गोदावरी बाई टेके

कु. कान्ता आर्या

गोदावरी बाई टेके हैदराबाद के स्वाधीनता संग्राम में आहुति देने वाली प्रथम महिला के रुप में जानी जाती है। इसने अपना बलिदान देकर देश भर की रमणियों को बता दिया कि देश की रक्षा का जब प्रश्न आता है तो महिलाओं ने भी कभी पीठ नहीं दिखाई, वह भी पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर सदा बलिदान के मार्ग पर आगे बढ़ी हैं।

हैदराबाद के ईटे तालुका भुम के एक प्रतिष्ठित आर्य परिवार की यह सुप्रसिद्ध बलिदानी महिला के रुप में आज भी क्षेत्र भर में प्रसिद्ध है। इस परिवार ने सदा ही अन्याय के प्रति अपना आक्रोश दिखाया है। सत्य के प्रति दृढ़ निष्ठा के कारण अन्याय के सामने सदा अपनी छाती अड़ाते रहा है। स्वराज्य के लिए देह त्यागना तो मानो इस परिवार के लिए बच्चों का ही खेल था।

दृढ़ व्रती आर्य परिवार होने के कारण ''**ओ३म्**'' के झण्डे के प्रति इस परिवार को अगाध निष्ठा थी। इस परिवार के सदस्य प्राण तो त्याग सकते थे किन्तु ''**ओ३म्**'' पताका को अपमानित होते हुए नहीं देख सकते थे।

उधर मुस्लिम रियास्त में कोई अपने घर पर ''**ओ३म्**'' का झण्डा लगाए, यह पुलिस व रजाकारों को कहां सहन हो सकता था। अत: पुलिस नित्य उन्हें झण्डा उतारने के लिए चेतावनी देती रहती। एक दिन पुलिस अधिकारी हेनरी अपने कुछ पुलिस जवानों व कुछ मुस्लिम रजाकारों को साथ लेकर आया तथा उन्हें तत्काल झण्डा उतारने का आदेश दिया। वीरों के इस परिवार ने झण्डा उतारने से साफ इन्कार कर दिया। जब पुलिस ने देखा की यह परिवार किसी चेतावनी या धमकी से कोई भय नहीं खा रहा तो पुलिस व रजाकारों ने दनादन गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दी। प्रथम गोली गोदावरी बाई के पति किशनराव टेके को लगी, वह घायल होकर गिर पड़े।दूसरी गोली उनके सुपुत्र को लगीवह भी घायल होकर गिर पड़ा।

गोदावरी बाई अब तक घर के अन्दर ही थी,ज्यों ही उसे इस घटना का पता चला तो वह भी झटपट बन्दूक उठा घर से बाहर आ गई तथा लूटपाट कर रहे रजाकारों पर दाग दी।

एक-एक कर तीन रजाकार भूमि पर गिर गए। इस महिला के इस चण्डी रुप को देख रजाकारों के होश गुम हो गए, घिग्घी बंध गई। उससे जान बचाने के लिए हैदरी व रजाकारों ने मिलकर गोदावरी बाई अब भी निरन्तर रजाकारों पर गोली चलाते हुए कहर दा रही थी। रजाकार घबरा कर भाग रहे थे तथा गोदावरी बाई निरन्तर आगकी लपटों में घिरती चली जा रही थी किन्तु सहायता के लिए किसी को नहीं पुकार रही थी। वह जानती थी कि जो उसकी सहायता को आगे आयेगा बाद में पुलिस की क्रूर छाया उन पर भी पड़ेगी।

इस प्रकार वीरता की यह देवी **''ओ३म्''** के झण्डे की रक्षा करते हुए परिवार सहित जीवित ही जल कर शहीद हो गई। क्या इतिहास में कहीं किसी ऐसी वीर देवी का दूसरा उदाहारण देखने को मिलेगा? जिस देश में ऐसी वीर प्रस्विनी महिलाएं होंगी, उस देश का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। ऐसी वीरता की देवी बलिदानी माता की कथाएं आज घर-घर में अपने बच्चों को सुना कर, उनमें वीरता का संचार किया जाता है।

देशभक्त महिलायें से साभार

आर्यों के दो प्राचीन पर्व दशहरा (विजयादशमी) एवं दीपावली शरद ऋतु के ये दोनों विशेष पर्व हैं। हमारे देश के साथ ही अनेक देशों में भी इन पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। परन्तु आजकल इन दोनों ही पर्वों का रूप बहुत विकृत हो गया है। दशहरे में आजकल नवरात्र की धूम हो गई है अर्थात् नव दिनों तक नवरात्र के माध्यम से दुर्गा देवी की पूजा उपासना की जाती है। रामलिला का मचंन देश के अधिक भागों में होता है। इस पर्व को राम का राक्षस राज रावण पर विजय होना प्रसिद्ध कर दिया है। इसलिए विजय दशमी के दिन रामलिला पूर्ण करके रामजी द्वारा दशरथ का वध दिखाया जाता है। यह रामलिला और रावण वध मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन बनता जा रहा है। अनेक प्रकार कौशल युक्त लाखों रुपये में बनाया जाता है। रामजी के एक तीर से उस रावण का वध दिखाकर कुछ समय में ही लाखों रुपये स्वाहा कर दिये जाते हैं। रावण के शरीर में लगाये सामग्री पठाखों से आस-पसा का वातावरण अत्यन्त दुषित हो जाता है। इस पर्व पर दुर्गा का विशरजन नदी या तालाब में करके उसके जल को भी दूषित कर दिया जाता है।

धीरज के फल मीठे

कु. रीना आर्या

धैय या धीरज शब्द के अर्थ से तो हम सभी परिचित हैं। यह भी जानते हैं कि जीवन में यह गुण होना जरूरी हैं,पर हम उसे विकसित करने पर उतना ध्यान नहीं देते।

ऐसा कोई भी व्यक्ति न कभी था,न होगा जिसको 'समस्याएं' न हो।'

समस्याएँ जीवन का अंग हैं।' लाख कोशिश कर लो, वे तो आते ही रहेगी। समस्या से निपटने में यदि कोई सबसे बड़ा सहयोगी होता हैं तो वह धैर्य हैं। धीरज न हो तो छोटी सी समस्या के आने पर भी हम झूंझुना उठेगा,मन में क्रोध – असंतोष तनाव उत्पन्न कर लेंगे। किसी से झगड़ेंगे बुरा –भला कहेंगे और नकारात्मक प्रतिक्रियाए करने लगेंगे। पर जब बाद में मन शान्त होगा तब हमें शर्मिन्दा होना पड़ेगा। अनेक बार तो कुछ न करें तो भी समस्याएं अपने आप थोड़ी देर में डण्ठी जाती हैं ।

जैसे बड़े शहरों में ट्राफिक जाम होना आम बात हैं। अनेक लोग ट्राफिक जाम में फसते ही जोर –जोर से गाड़ी का हार्न बजाते रहते हैं। यह अधीरता की निशानी हैं।अथवा जहां कही भी जगह दीखी , वहा गाड़ी या टू–व्हीलर घुसा देते हैं अत:जाम खुलने की बजाए और भयानक हो जाती हैं। उस समय अपनी जगह पर बने रहे और शांत रहे, धीरज रखें। आगे वाले को भी घर पहुचना हैं ,उसके आगे का रास्ता खाली होते ही वो चल पड़े, और आपको भी रास्ता मिलेगा । हार्न बजाकर चिल्लाकर गुस्सा करने से ट्राफिक जाम तो खत्म नहीं होगी । परन्तु हमारा दिमाग जरूर जाम होगा, हमारा सिरदर्द जरूर बढेगा।

धीरज रखने से मन शांत रहता हैं । सही दिशा में विचारने का समय मिलता हैं। समस्या से बाहर निकलने का रास्ता सुझता हैं। उद्वेग से होने वाले मनोशारीरिक दुष्प्रभाव से हम बच जाते हैं ।

धैर्य हमें ट्रबल शूटर बनाता हैं। समाज में हमारी ट्रबल शूटर होने की साख अर्थात गुडवील बनाती है। समस्याए खुद सुलझा पाने से आत्मविश्वास बढता हैं, फिर बड़ी–बड़ी समस्याओं से भी हम घबराते नही हैं । ये सारांश धीरज रूपी पेड़ के मीठे–मीठे फल हैं। इसलिए धैर्य को हमेशा अपनी जेब में ही लेकर घूमें।

विद्यार्थी और तनाव से साभार

पुरुषार्थ कीजिये!

आचार्य मनुदेव वाग्मी

मनुष्य संसार में सबसे अधिक गुण, समृद्धियाँ, शक्तियाँ लेकर अवतरित हुआ हैं। शारीरिक दृष्टि से हीन होने पर भी परमेश्वर ने उसके मस्तिष्क में ऐसी -ऐसी गुप्त आश्चर्य जनक शक्तियाँ प्रदान की है, जिनके बल से वह हिंस्त्र पशुओं पर भी राज्य करता हैं,दुष्कर कृत्यों से भयभीत नही होता, आपदा और कठिनाइमें भी वेग से आगे बढ़ता हैं।

मनुष्य का पुरुषार्थ उसके प्रत्येक अंग में कूट-कूटकर भरा गया हैं। मनुष्य की सामर्थ्य ऐसी हैं कि वह अकेला समय के प्रवाह और गतिकों मोड़ सकता हैं। धन, दौलत,मान,ऐश्वर्य सब पुरूषार्थद्वारा प्राप्त हो सकते हैं।

अपने गुप्त मन से पुरूषार्थ का गुप्त सामर्थ्य गुप्त सामर्थ्य निकालिए। वह आपके मस्तिष्क में हैं। जब तक आप विचारपूर्वक इस अन्त: स्थित वृत्तियों को बाहर नहीं निकालते तब तक आप भेड़ बकरी बने रहेंगे। जब आप इस शक्तिकों अपने कर्मों से बाहर निकालेंगे ,तब प्रभावशाली बन सकेंगे।

संसार के चमत्कार कहाँ से प्रकट हुए? संसार के बाहर से नहि आए और ब्रह्मशक्ति आकर उन्हे प्रस्तुत नहीं कर गयी हैं। उनका जन्म मनुष्य के भीतर से हुआ था। संसार की सभी शक्तियाँ, सभी गुण, सभी तत्व, सभी चमत्कार मनुष्य के मस्तिष्क में से निकले हैं। उद्गमस्थान हमारा अन्त: करण ही हैं संसार में छोटे मोटे लोगों के तुम क्यों गुलाम बनते हो?क्यों मिमियाते, झींकते या बड़बड़ाते हो? दु:ख, चिन्ता और क्लेशो से क्यों विचलित हो उठते हो? नहीं, मनुष्य के लिए इन सबसे घबरानें की कोई आवश्यकता नहीं। वह तो अचल, दृढ़, शक्तिशाली और महाप्रतापी हैं।

इसी क्षण से अपना दृष्टिकोण बदल दीजिए। अपने-आपकों महाप्रतापी,पुरुषार्थी पुरुष मानना शुरु कर दीजिए। तत्पर हो जाइये। सावधानी से अपनी कमजोरी और कायरता छोड़ दीजिए। बल और शक्तिके विचारों से आपका सुषुप्त अंश जाग्रत हो उठेगा।

सामर्थ्य और शक्ति आपके अंदर हैं। उनका केन्द्र आपका मस्तिष्क हें। वह नित्य, स्थायी और निर्विकार हैं। फिर किस वस्तु के अभाव को महसूस करतें हैं? किस शक्ति को बाहर ढूंढ़ते फिरते हैं? किसका सहारा ताकते

हैं? अपनी ही शक्ति से आपको उठाना और उन्नति करनी है। उसी से प्रभावशाली व्यक्तित्व बनाना हैं। आपको किसी भी बाहरी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आपके पास पुरुषार्थ का बड़ा खजाना हैं। उसे खोलकर काम में लाइए। मनुष्य को संसार में महत्ता प्रदान करनेवाला पुरुषार्थ ही हैं। उसी की मात्रा से एक साधारण तथा महान व्यक्तियों में अन्तर हैं। पुरुषार्थ की वृद्धि पर ही मनुस्य की उन्नती निर्भर हैं। सामर्थ्य सम्पन्न मनुष्य ही सुख,सम्पत्ति, यश, कीर्ति एवं शान्ति प्राप्त कर सकता हैं पुरुषार्थ का निर्माण कई मानसिक तत्वों के सम्मिश्रण से होता हैं।

१. साहस-इन सबमें मुख्य हैं। नए कार्यों में तथा कठिनाइयों के समय हमें कोई भी बाह्य शक्ति आश्रय प्रदान नहीं कर सकती है। साहसी वह कार्य कर दिखाता हैं जिसे बलवान् भी नहि कर पाते। साहस का संबंध मनुष्य के अन्तः स्थित निर्भयता की भावना से हैं।उसी से साहस कि वृद्धि होती हैं।

२. दृढ़ता-दूसरा तत्व हैं जो पुरुषार्थ प्रदान करता हैं।दृढ़ व्यक्ति अपने कार्यों में खरा और पूरा होता हैं। वह एकाग्र होकर अपने कर्तव्यों पर डटा रहता हैं।

३. महानता की महत्वकांक्षा पुरुषार्थी को नवीन उत्तरदायित्व -जिम्मेदारी अपने उपर लेने का निमन्त्रण देती हैं और मुसीबत में धैर्य एवं आश्वासन प्रदान करती हैं। स्वेट मार्डन साहब के अनुसार बड़प्पन की भावना रखने से हमारी आत्मा की सर्वोत्तकृष्ट शक्तियों का विकास होता हैं, वे जाग्रत हो जाती हैं। इस गुण के बल पर पुरुषार्थी जिस दिशा में बढ़ता हैं,उसी में ख्याति प्राप्त करता चलता हैं। वह अपनें महत्व को समझता हैं और अपनी सभी शक्तियों के द्वारा सदा आत्म महत्व को बढ़ाता रहता है।

धीमन्तो वन्द्यचरिता मन्यन्ते पौरुषं महत्।
अशक्ताः पौरुषं कर्तुं क्लीबा दैवमुपासते।।

अर्थात् :-'वन्दनीय चरित्रवाले बुद्धिमान जन पुरुषार्थ को प्रधान मानते हैं और जो नपुंसक एवं पुरुषार्थहीन जन हैं ,वे भाग्य की उपासना करते हैं।' और भी कहते हैं-

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थात :- उद्यत अथवा पुरुषार्थ से सम्पूर्ण कार्य सफल होते हैं मनोरथ से नहीं क्योंकि सोते हुए सिंह के मुख में मृग प्रवेश नहि करते।'इससे सिद्ध होता हैं कि पुरुषार्थ श्रेष्ठ हैं।

आशा की नयी किरण से साभार

अपनी आदर्श संस्कृति को कैसे बचाऐं-

भारतवासियों (आर्यो) निन्दा त्यागो अंगड़ाई लो

पं. उम्मेद सिंह विशारद्

आर्य समरज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने अपना संपूर्ण जीवन भारत की प्राचीन संस्कृति,संस्कार व स्वाधीनता के बचाने में लगा दिया। उनका आशय था कि भारत की मूल संस्कृति व संस्कार ईश्वरीय वाणी वेदानुकूल होने पर कई विदेशी संस्कृतियों के संपर्क में आई,कभी मुगलों के, कभी जंगलियों के कभी अंग्रेजों के संपर्क में आने पर भी अन्य संस्कृतियों को प्रभावित करती रही किन्तु किसी भी संस्कृति के सामने झुकी नहीं। संसार के इतिहास में कई संस्कृतियां उत्पन्न हुई किन्तु आज उनका नामनेवा नहि हैं। किन्तु भारत की संस्कृति महाभारत काल के बाद आज तक अनेक झंझावतों से गुजरती हुई भी जीवित हैं। भारत के भोगोलिक, भौतिक, पर्यावरण, व सृष्टि उत्पत्ति का मूल केन्द्र तथा वैदिक संस्कृति व ज्ञान के कारण ही आज जीवित है और जीवित रहेगी।

लार्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी संस्कार और संस्कृति फैलाने का षड्यन्त्र किया

षड्यन्त्र :- आर्य भारत में बाहर से आये थे, नहीं, नहीं यह सबसे बड़ा षड्यन्त्र था। अपितु आर्य भारत के मूल निवासी थे, आइए विचार करते हैं। १८५७की क्रान्ति असफल होने के कारण भीतर घात था,और देश द्रोहियों के कारण असफलता मिलीअंग्रेजों ने क्रान्तिकारियों को बुरी तरह कुचल दिया था। ऐसी विषम परिस्थिति में भी महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन का नवजागरण किया था। १८५७से१९४७ तक देश के नवयुवकों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान यज्ञ में आहूतियाँ दी फासी के फन्दो को खुशी से चूमा। आर्य समाज के वीरों ने सर्वाधिक प्रतिशत स्वतन्त्रता आन्दोलन में आहूतियाँ दी थी।

लार्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा पद्धति में महान् षड्यंत्र किया कि आर्य बाहर से आये, और भारत पर काबिल हो गये जो सर्वथा झूठ था।

सृष्टि उत्पत्ति के आदि काल से, व मध्यकाल, व वर्तमान काल के कुछ आर्य श्रेष्ठों की झलक आदिकाल के आर्य संक्षेप में :- भारत (आर्यव्रत) की धरती पर सर्वप्रथम ईश्वर ने चारों वेदों का ज्ञान व अग्नि, वायु आदित्य और अंगिरा **शेष पृष्ठ २४ ....**

एक आर्य युवक की अरब देशों की रोमांचकारी यात्रा

तायफ से रुचिराम जी फिर मक्का की ओर लौटे। रास्ते में जोर की वर्षा होने लगी। कहीं बचने की जगह न पाकर ये भाग कर एक पहाड़ी गुफा में जा बैठे। थोड़ी देर बाद उसमें बहुत सी बकरियां भी आ घुसी, गुफा में खूब अन्धेरा था। रुचिराम जी का सारा सामान और सारे वस्त्र भीग गये थे। वहां आग जलाने का भी कोई साधन नहीं था। सबेरे बद्दू लोग अपनी-अपनी बकरियां पकड़ने आये, तब गुफा में दो झोपड़ियां भी दिखाई दी। बद्दुओं से पूछने पर मालुम हुआ कि, बद्दू लोग हाजियों को लुटकर और उन्हें मार कर इन्हीं गुफाओं में फेंक देते थे। यहां तो हर गुफा हाजियों की हड्डियों से भरी मिलेगी।

रुचिरामजी मक्के से जिद्दा पहुंचे और वहाँ से भी आगे पैदल चल दिये, बारह दिनों में बहुत से गांवों में होते हुए मदीना पहुंच गये। रुचिरामजी ने मदीना में दो महीने रह कर 'हिजबुल्लाह' का प्रचार किया। वहाँ अरब स्त्रियाँ सिर से पैर तक बुरका नहीं ओढ़ती, सिर पर दोपटां ओढ़ती हैं। मुंह पर काला रुमाल डालती है, पर आखें साफ खुली रहती है।

मदीना से वे मिश्र की तरफ पैदल चले। रास्ते में उन्हें एक जगह भेडियों ने घेर लिया। उन्होंने दियासलाई जलाकर रुमाल में आग लगा दी और उसे एक झरबेरी पर रख दिया। वह जलने लगी और भेड़िया भाग गये। पर वे पेशाब करने के लिए थोड़ी ही दूर पर जाकर बैठे थे कि, इतने में भेड़ियों ने फिर झपट्टा मारा। वे भाग कर फिर आग के पास आ बैठे और एक बड़ी लकड़ी लगा दी। वहीं सो भी गये। इस तरह भेड़ियों से जान बची।

रास्ते में दो-दो दिन के बाद कुआं आता था और वहीं मंजिल होती थी। वे रास्ते के लिए खाने-पीने का सामान संग्रह करके एक मंजिल से दूसरी मंजिल को जाते थे। रास्ते में जो बन्दरगाह पड़ते वहां कहीं दस दिन, कहीं आठ दिन ठहरते, व्याख्यान देते और समुद्र किनारे-किनारे पैदल चलते।

महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में एम.ए. (संस्कृत) 02 वर्ष, योगाचार्य 02 वर्ष, पी.जी.डिप्लोमा योग 01 वर्ष, संस्कृत की पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षा तथा बी.एड. आदि पाठ्यक्रम संचालित हैं।

तप से मेरा हृदय विशाल हो ....

डॉ. अशोक आर्य

मैं अपनी राक्षसी आदतों को छोड़कर दानशील बनूं। सदा तप करता रहूँ तथा इस तप अपनी से बुराइयों जला कर राख कर अपने हृदय की विशाल करुंगा इस भावना का उपदेश यह मंत्र इस प्रकार कर रहे हैं:-

प्रत्युष्टंरक्शः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तंरक्शो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वुन्त्रिक्शमन्वेमि।।

ऋ.१/७.

इस मंत्र में चार बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुये उपासक प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना कर रहा हैं:-

राक्षसी प्रवृत्तयों का नाश हो :-

राक्षसी प्रवृत्तियां प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर खीचती हैं। यह प्रवृत्तियां बहुत खतरनाक होती हैं,जिसमें घुसती हैं,जिसे भी घेरती हैं उसका अल्प काल में नाश हो जाता हैं उसका अपना ही नाश नही होता जो इसके आस पास होते हैं या जो इसके परिजन व मित्र होते हैं वह भी कलह-क्लेश में फसकर नाश हो जाते हैं। इसलिए प्रभु से विनती हैं की हे प्रभु! यह जो राक्षसी प्रवृत्तियां हैं यह मेरे अन्दर न घुसने पावें तथा आपकी सहायता से मैं इन्हें जला कर नष्ट कर दूँ इन्हें अपने अन्दर प्रवेश न करने दूँ।

भाव यह हैं की अपने हित के लिए अन्य को हानि देने वाली जितनी भी भावनाए हैं, वह मुझमें प्रवेश न कर सके , मुझमें पैदा ही न होने पावें। मैं अपने साधनों को बढ़ाने के लिए किसी भी रूप में दूसरों को हानि न होने दूँ। सबके हित का ही सदा ध्यान रखू।

दान देने के पश्चात् ही खाऊँ :-

इस मंत्र में जिस दूसरें बिन्दु पर विचार किया गया हैं,वह हैं दान की वृत्ति। जीव ही नही चाहता कि वह सदा अपनें ही हित साधन में लगा रहें उसे हित का भी ध्यान रखना चाहता हैं। इसलिए प्रभु से प्रार्थना करता हैं कि वह उसे इतनी शक्ति दे कि वह अपनी दान न देने वाली आदमी नष्ट कर दे तथा अपनी ही हित का ध्यान न रखते हुए अपनी सब सम्पत्ति अपने ही हित में व्यय न करेऔरों के हित का भी ध्यान रखे, औरों को भी ऊपर उठाने का यत्न करें। जीव चाहता हैं कि वह सदा त्यागपूर्वक प्रभु की दी हुई सम्पत्तियों का भोग करें,उपभोग करे। इसके लिए वह अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की इच्छा रखता है। जिस प्रकार यज्ञ में डाला हुआ पदार्थ दूर-दूर तक न जाने कितने

लोगों की ओर न जाने किस-किस का हित करता हैं। उस प्रकार जीव चाहता हैं कि उसके द्वारा किस-किस का हित हुआ हैं, इसका भी उसे पता न चले,वह जो भी दे गुप्त रूप से ही दे,गुप्तदान के रूप से ही दे।

इस प्रकार जीव चाहता हैं कि जिस प्रकार यज्ञशेष को सबमें बाँट कर फिर बचा हुआ ही अपने लिए उपभोग किया जाता हैं। इस प्रकार मैं सबमें बाँटने के पश्चात बचे हुए धन का ही अपने लिए प्रयोग करू तथा बचे हुए शेष को ही अपने लिए प्रयोग करू।

तप से दान की प्रवृत्तियां आती हैं

मंत्र कहता हैं कि तप दो कार्य करता हैं-

१.यह राक्षसी तथा अदान की आदतों को जलाकर राख कर देता हैं। तथा

२.दान की आदतों को बढ़ाता हैं। इसे ही ध्यान में केन्द्रित कर मंत्र कह रहा हैं,उपदेश कर रहा हैं कि राक्षसी वृत्तियों को दूर करने के लिए तपश्चर्या करें तथा दान न देने की आदतों का विनाश करने के लिए तप करें। तपश्चर्या प्रभु का स्मरण, प्रभु के समीप आसन लगाने से हमारी जितनी भी राक्षसी आदतें हैं,वह जला नष्ट कर दी जाती हैं। दान न देने की भावना भी दूर हो जाती हैं तथा हम दूसरा केसहायक बन कर उन्हे भी अपने को ही ऊपर उठाने के लिए सहयोग करते हैं अपने धन को दान स्वरूप सहयोग के लिए उन्हे दे देते हैं। जब हमारें अन्दर की वासनाओं की वृत्तियाँ ही नष्ट हो जावेंगे, तो अन्यों को हानि देने का तो कभी सोच भी नही सकते।

हृदय की विशालता से देव बनते हैं :-

हृदय की विशालता हमें देव तक ले जाती हैं, उन्नति की ओर ले जाती हैं। इस कारण ही तप करने वाला व्यक्ति सदा अपने हृदय को विशाल बनाने का प्रयास करता हैं। उसके जीवन का कोइ भी कार्य कभी भी स्वार्थ बनकर हृदय को संकुचित करके नहीं किया जाता। वह सदा खुले मन से दूसरे के हित को सामने रखते हुए सब कार्य करता हैं। उसके अन्दर की यह विशालता ही उसके हृदय को पवित्र बनाती हैं,पवित्र रखती हैं। यह ही कारण हैं की उसके अन्दर भोग की इच्छाए कभी जन्म ही नहीं ले पाती। जब हम अपनें से पहले दूसरे का हित चाहते हैं तो हम पवित्र हो जातें हैं तथा ऐसा पवित्र व्यक्ति ही मानवत्व से उठकर देव बनता हैं। अत: हम भी देव अर्थात् दूसरों को कुछ देने वाले बन जाते हैं।

आर्ष ज्योति से साभार

अपनी आदर्श संस्कृति को कैसे बचाऐं-

२० का पृष्ठ शेष ....

चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया। इसी भारत की धरती पर-मनु ऋषि, ब्रह्मा ऋषि, प्रजापति पतञ्जलि, व्यास, जैमिनि, ने दर्शन शास्त्रों का ज्ञान कराया- इसी धरती पर मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य श्री राम, तथा योगिराज श्री कृष्ण हुए- यहीं पर कुमारिल भट्ट ने वेदों की रक्षा की-यही पर अनेक देव पुरुषों ने आदि काल में जन्म लिया, और ईश्वरीय संस्कृति का संदेश दिया। इसी धरती पर अनेक ऋषिकाओं का जन्म हुआ-यही पर, माता दुर्गा, मदालसा माता, सीता, द्रोपदी, अनुसुया गांधारी आदि अनेक वीरांगनाएं, एवं तपस्वियों ने जन्म लिया।

महर्षि बाल्मिकी, सूरदास, तुलसीदास, कबीर दास, रवीद्रनाथ टैगोर व अनेक कवि व साहित्यकारों का जन्म हुआ-यही पर छत्रपति वीर शिवा जी, महाराणा प्रताप, भामाशाह, पृथ्वीराज चौहान, आदि-यही पर महारानी पद्मावती, झांसी की रानी, रणचण्डी लक्ष्मी बाई व अनेक वीरांगनाएं हुई- इसी धरती पर गुरुनानक, गुरु गोविन्द सिंह वीर बंदा बैरागी शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर, सुभाष चन्द्र बोस, योगीराज अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्रपाल, पं. लेखराम, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, आदि-आदि-१. यह भारत भूमि आर्यों की जन्म स्थनी हैं उक्त सभी आर्य थे।

विशेष आर्य युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी :- इस धरती पर क्रान्तदर्शिता के अग्रदूत, महान् समाज सुधारक रुढ़ी परम्पराओं के सुधारक, धार्मिक अंधविश्वासों को उखाड़ने वाले, वेदों के शुद्ध ज्ञान देने वाले, स्वराज्य शब्द, एवं स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाने वाले नारी शिक्षा को सर्वप्रथम लागू करने वाले, सच्चे ईश्वर की अनुभूति कराने वाले, जाति-पांति छुआ-छूत को मिटाने वाले, भारत की प्राचीन संस्कृति को पढ़ाने वाले, तथा उक्त सभी बुराइयों को दूर करने के लिये, सदैव-सदैव के लिये, आर्य समाज के संस्थापक वैचारिक क्रान्तिकारी विचारों का ज्ञान कराने वाला अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता, युग पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द जी का इसी धरती पर जन्म हुआ।

यही धरती भारत वर्ष आर्यों की जन्म भूमि, धर्मभूमि व कर्मभूमि है। श्रद्धेय देशवासियों, यह तो थोड़े से आदि व वर्तमान आर्यों के नामो का संकेत किया है।

नूतन निष्काम पत्रिका से साभार

डॉ राजेंद्र प्रसाद जी के साथ नेहरू ने जो किया, उसको बेनकाब करता राज्यसभा सांसद आर. के सिन्हा जी का लेख। पढिए और अतीत के सत्य का सामना कीजिए डा. राजेन्द्र प्रसाद की शख्सियत से पंडित नेहरु हमेशा अपने को असुरक्षित महसूस करते रहे। उन्होंने राजेन्द्र बाबू को नीचा दिखाने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं दिया। हद तो तब हो गई जब 12 वर्षों तक राष्ट्रपति रहने के बाद राजेन्द्र बाबू देश के राष्ट्रपति पद से मुक्त होने के बाद पटना जाकर रहने लगे तो नेहरु ने उनके लिए वहां पर एक सरकारी आवास तक की व्यवस्था नहीं की। उनकी सेहत का ध्यान नहीं रखा गया। दिल्ली से पटना पहुंचने पर राजेन्द्र बाबू बिहार विद्यापीठ, सदाकत आश्रम के एक सीलन भरे कमरे में रहने लगे।

उनकी तबीयत पहले से खराब रहती थी, पटना जाकर ज्यादा खराब रहने लगी। वे दमा के रोगी थे। सीलनभरे कमरे में रहने के बाद उनका दमा ज्यादा बढ़ गया। वहां उनसे मिलने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण पहुंचे। वे उनकी हालत देखकर हिल गए। उस कमरे को देखकर जिसमें देश के पहले राष्ट्रपति और संविधान सभा के पहले अध्यक्ष डा.राजेन्द्र प्रसाद रहते थे, उनकी आंखें नम हो गईं। उन्होंने उसके बाद उस सीलन भरे कमरे को अपने मित्रों और सहयोगियों से कहकर कामचलाउ रहने लायक करवाया। लेकिन, उसी कमरे में रहते हुए राजेन्द्र बाबू की 28 फरवरी,1963 को मौत हो गई।

क्या आप मानेंगे कि उनकी अंत्येष्टि में पंडित नेहरु ने शिरकत करना तक भी उचित नहीं समझा। वे उस दिन जयपुर में एक अपनी '''तुलादान'' करवाने जैसे एक मामूली से कार्यक्रम में चले गए। यही नहीं, उन्होंने राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डा.संपूर्णानंद को राजेन्द्र बाबू की अंत्येष्टि में शामिल होने से रोका। इस मार्मिक और सनसनीखेज तथ्य का खुलासा खुद डा.संपूर्णानंद ने किया है। संपूर्णानंद जी ने जब नेहरू को कहा कि वे पटना जाना चाहते हैं, राजेन्द्र बाबू की अंत्येष्टि में भाग लेने के लिए तो उन्होंने (नेहरु) संपूर्णानंद से कहा कि ये कैसे मुमकिन है कि देश का प्रधानमंत्री किसी राज्य में आए और उसका राज्यपाल वहां से गायब हो। इसके बाद डा. संपूर्णानंद ने अपना पटना जाने का कार्यक्रम रद्द किया। हालांकि, उनके मन में हमेशा यह मलाल रहा कि वे राजेन्द्र बाबू के अंतिम दर्शन नहीं कर सके। वे राजेन्द्र बाबू का बहुत सम्मान करते थे। डा0 सम्पूर्णानंद ने राजेन्द बाबू के सहयोगी प्रमोद पारिजात शास्त्री को लिखे गए पत्र में अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए लिखा था कि ''घोर आश्चर्य हुआ कि बिहार के जो प्रमुख लोग दिल्ली में थे उनमें से भी कोई पटना नहीं गया। (किसके डर से?)

सबलोगों को इतना कौन सा आवश्यक काम अचानक पड़ गया, यह समझ में नहीं आया। यह अच्छी बात नहीं हुई। यह बिल्कुल ठीक है कि उनके जाने न जाने से उस महापुरुष का कुछ भी

बनता बिगड़ता नहीं। परन्तु ये लोग तो निश्चय ही अपने कर्तव्य से च्युत हुए। कफ निकालने वाली मशीन वापस लाने की बात तो अखबारों में भी आ गई हैं मुख्यमंत्री की बात सुनकर आश्चर्य हुआ। यही नहीं, नेहरु ने राजेन्द्र बाबू के उत्तराधिकारी डा. एस. राधाकृष्णन को भी पटना न जाने की सलाह दे दी। लेकिन, डा0 राधाकृष्णन ने नेहरू के परामर्श को नहीं माना और वे राजेन्द्र बाबू के अंतिम संस्कार में भाग लेने पटना पहुंचे। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि नेहरू किस कदर राजेन्द्र प्रसाद से दूरियां बनाकर रखते थे।

ये बात भी अब सबको मालूम है कि पटना में डा. राजेन्द्र बाबू को उत्तम क्या मामूली स्वास्थ्य सुविधाएं तक नहीं मिलीं। उनके साथ बेहद बेरुखी वाला व्यवहार होता रहा। मानो सबकुछ केन्द्र के निर्देश पर हो रहा हो। उन्हें कफ की खासी शिकायत रहती थी। उनकी कफ की शिकायत को दूर करने के लिए पटना मेडिकल कालेज में एक मशीन थी ही कफ निकालने वाली। उसे भी केन्द्र के निर्देश पर मुख्यमंत्री ने राजेन्द्र बाबू के कमरे से निकालकर वापस पटना मेडिकल कॉलेज भेज दिया गया। जिस दिन कफ निकालने की मशीन वापस मंगाई गई उसके दो दिन बाद ही राजेन्द बाबू खास्ते-खास्ते चल बसे। यानी राजेन्द्र बाबू को मारने का पूरा और पुख्ता इंतजाम किया गया था ।

दरअसल नेहरु अपने को राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष बहुत बौना महसूस करते थे। उनमें इस कारण से बढ़ी हीन भावना पैदा हो गई थी। इसलिए वे उनसे छतीस का आंकड़ा रखते थे। वे डा.राजेन्द्र प्रसाद को किसी न किसी तरह से आदेश देने की मुद्रा में रहते थे जिसे राजेन्द्र बाबू मुस्कुराकर टाल दिया करते थे। नेहरू ने राजेंद्र प्रसाद से सोमनाथ मंदिर का 1951 में उदघाटन न करने का आग्रह किया था। उनका तर्क था कि धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के प्रमुख को मंदिर के उदघाटन से बचना चाहिए। हालांकि, नेहरू के आग्रह को न मानते हुए डा. राजेंद्र प्रसाद ने सोमनाथ मंदिर में शिव मूर्ति की स्थापना की थी। डा. राजेन्द्र प्रसाद मानते थे कि ''धर्मनिरपेक्षता का अर्थ अपने संस्कारों से दूर होना या धर्मविरोधी होना नहीं हो सकता।'' सोमनाथ मंदिर के उदघाटन के वक्त डा. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है लेकिन नास्तिक राष्ट्र नहीं है। डा. राजेंद्र प्रसाद मानते थे कि उन्हें सभी धर्मों के प्रति बराबर और सार्वजनिक सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए।

नेहरु एक तरफ तो डा. राजेन्द्रप्रसाद को सोमनाथ मंदिर में जाने से मना करते रहे लेकिन, दूसरी तरफ वे स्वयं 1956 के इलाहाबाद में हुए कुंभ मेले में डुबकी लगाने चले गए। बताते चलें कि नेहरु के वहां अचानक पहुँच जाने से कुंभ में अव्यवस्था फैली और भारी भगदड़ में करीब 800 लोग मारे गए। हिन्दू कोड बिल पर भी नेहरु से अलग राय रखते थे डा. राजेन्द्र प्रसाद।

आमंत्रित राजनेता –

श्री धमेन्द्र जी प्रधान , केन्द्रीय राज्य मंत्री
श्री कै. अभिमन्यु जी, वित्तमंत्री हरियाणा
श्री अर्ककेशरी देव जी, सांसद
श्री बसन्त जी पण्डा, विधायक
अध्यक्ष भा.ज.पा ओड़िसा
श्री सुदर्शन भगत जी, के.राज्य मंत्री
श्री डॉ. सत्यपाल जी आर्य, मा.सं.विकास मंत्री
श्री ए.बी. स्वामी जी, सांसद राज्यसभा, नुआपड़ा
श्री राजुभाई धोलकिया, पूर्व विधायक

आमंत्रित भजनोपदेशक –

श्री डॉ. सारस्वत मोहन जी मनीषी कवि (दिल्ली)
श्री पं. सुरेन्द्रपाल जी आर्य (नागपुर)
श्री पं. वीरपाल जी (उत्तर प्रदेश)
श्री पं. सत्यपाल जी सरल (देहरादून)
श्री पं. कुलदीप जी विद्यार्थी (उत्तर प्रदेश)

आमंत्रित विदुषियां –

आचार्या डॉ. सुमेधा जी (चोटिपुरा)
आचार्या डॉ. नन्दिता शास्त्री जी (वाराणसी)
आचार्या डॉ. राजन जी मान (बहादुरगढ़)
माता शन्नोदेवी जी (भुवनेश्वर)
आचार्या शारदा (कन्या गु.छेतेंगा)
आचार्या डॉ. सुकामा जी (चोटिपुरा)
आचार्या डॉ.प्रियम्वदा जी वेदभारती (नजीबाबाद)
आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा (शिवगंज)
आचार्या डॉ.पवित्रा विद्यालंकार (हाथरस)

–: द्रष्टव्य आगन्तुक महानुभावों के लिये :–

- हरियाणा दिल्ली, उत्तराखण्ड, गुरुग्राम, नोएडा, गाजियाबाद से आने वाले श्रद्धालु निजामुद्दीन से सीधे खरियार रोड के लिये समता एक्सप्रेस ले सकते हैं, अथवा रायपुर तक कोई ट्रेन, और वहां से बस, ट्रेन दोनो साधन उपलब्ध है।
- अहमदाबाद से सीधे खरियार रोड के लिए पुरी अहमदाबाद एक्सप्रेस प्रतिदिन चलती है।
- जोधपुर, जयपुर, कोटा से भी खरियार रोड अथवा रायपुर के लिये पुरी अजमेर सीधी ट्रेन है।

नोटः– छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से गुरुकुल १०० कि.मी. दूर है जहाँ से सारे साधन गुरुकुल पहुंचने के लिए प्राप्त हो जाएगें।

चतुर्वेद विश्वशान्ति महायज्ञ :–

इस स्वर्ण जयंती के शुभअवसर पर १ दिसम्बर से २५ दिसम्बर २०१७ तक भगवान की दिव्यवाणी चारों वेदों के पवित्र मंत्रों से चतुर्वेद महायज्ञ वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् **आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश** (गुजरात) **डॉ. सोमदेव शास्त्री** (मुम्बई) एवं **पं. विशिकेसन शास्त्री** (आमसेना) **आचार्य गौतम आर्य** (करनाल हरियाणा) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा।

५१ कुण्डीय महायज्ञ पर्यावरण संरक्षण हेतुः–

२३,२४,२५ दिसम्बर को श्रद्धापूर्ण वातावरण में ५१ कुण्डीय राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन भी होगा। इस महायज्ञ में मुख्य यजमान बनने के इच्छुक श्रद्धालु सज्जनों से निवेदन है कि वे पहले से ही अपना स्थान सुरक्षित करा लेवें।

भव्य यज्ञशाला का लोकार्पणः–

स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर गुरुकुल की नयी भव्य यज्ञशाला का लोकार्पण **पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती** की अध्यक्षता में महाशय **धर्मपाल जी एम.डी.एच. चैयरमेन** के करकमलों से होगा।

विभिन्न कार्यक्रम :–

२३/१२/१७ –

· प्रातः ८ बजे भव्य यज्ञशाला एवं ५१ कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ का उद्घाटन आदरणीय **पूज्य महाशय धर्मपाल जी** के कर कमलों से तथा **श्री बसन्त भाई पण्डा जी** की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

· ९ बजे "**ओ३म्**" ध्वजारोहण **महाशय धर्मपाल जी** के करकमलों से तथा **कै.रुद्रसेन जी** की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

· १० बजे स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन, छत्तीसगढ़ के **मुख्य मंत्री माननीय डॉ. रमनसिंह जी** के मुख्यातिथ्य एवं झारखण्ड की **महामहिम राज्यपाल द्रौपदी मूर्मू** की अध्यक्षता तथा **हिमांशु द्विवेदी जी,** सम्पादक हरिभूमि के संयोजन में सम्पन्न होगा।

ओड़िशा के राज्यपाल **महामहिम एस.सी. जमीर** गुरुकुल के आचार्य एवं शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को तथा एम.डी. विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त छात्रों को स्वर्ण पदक एवं प्रमाण पत्र प्रदान करेंगे।

· सायं ३ बजे से विशाल शोभायात्रा समीपस्थ खरियार रोड नगर में निकलेगी।

· रात्रि ८ बजे से १० बजे तक भजन संध्या का कार्यक्रम है।

२४/१२/१७ –

· प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक ५१ कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ तथा नये विद्यालय भवन का उद्घाटन **पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी** सांसद की अध्यक्षता में केन्द्रीय राज्य मंत्री **श्री धर्मेन्द्र जी प्रधान** के करकमलों से सम्पन्न होगा।

· १० बजे से १ बजे तक, वेद एवं विद्वत् सम्मान् समारोह **डॉ. पूनम सूरी जी** की अध्यक्षता में होगा। इसके मुख्य अतिथि **श्री सूदर्शन जी भगत,** केन्द्रीय आदिवासी राज्यमंत्री करेंगे। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल जी आर्य, केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं श्री धर्मेन्द्र जी प्रधान होंगे।

· २ बजे से ४ बजे तक, भारतीय संस्कृति रक्षा सम्मेलन।

· सायं ४ बजे से ६ बजे तक, व्यायाम प्रदर्शन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा।

· रात्रि ८ बजे गुरुकुल सम्मेलन **श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी** की अध्यक्षता में होगा इसका उद्घाटन हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री **श्री कै. अभिमन्यु जी** करेंगे। इस सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का आकर्षक कार्यक्रमों के साथ भजन, संध्या का भी आयोजन होगा।

· १० बजे से आदिवासी लोककलाकारों का सांस्कृतिक कार्यक्रम।

२५/१२/१७–

· प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक, वानप्रस्थ एवं सन्यास दीक्षा तथा यज्ञ की पूर्णाहुति।

· ११ बजे से २ बजे तक, नारी जागृति सम्मेलन।

· सायं ४ बजे से ६ बजे तक, व्यायाम प्रदर्शन ब्रह्मचारणियों द्वारा।

· ८ बजे से १० तक, समापन एवं कार्यकर्त्ता सम्मान समारोह।

सेवा में,

.....

.....

.....

सदस्यता हेतु एक प्रतिः 10 रु. वार्षिक शुल्कः 100 रु. आजीवनः 1000 रु.

प्रधान सम्पादकः स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से शारदा आफसेट प्रिन्टर्स, ग्राम-डुण्डा, सेजबहार रोड, रायपुर से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया। प्रकाशकः गुरुकुल आश्रम, आमसेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओड़िशा)

निवेदक –

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता)
सुश्री पुष्या 'वेदश्री' (आचार्या, क.गुरुकुल)
डॉ. कुंजदेव मनीषी (उपाचार्य)
चन्दन साहू (मंत्री)
राव हरिश्चन्द्र आर्य (संरक्षक)
रोहित नरुला (रायपुर)
जगदीशचन्द पसरीचा (रायपुर)
धर्मपाल खण्डूजा (भिलाई)
आचार्य मंजीत शास्त्री (दिल्ली)
चतरसिंह गुरुदत्ता (खरियार रोड)
पुरुषोत्तम मालानी (खरियार रोड)
रामनिवास गोयल (खरियार रोड)
विष्णुप्रसाद कुच्छल (खरियार रोड)
लखनलाल लखमनिया (खरियार रोड)
भुवनलाल नायक (चनाबेड़ा)
रामेश्वर जसमतिया (जोधपुर)
बलदेव अशफल्या (रायपुर)
आचार्य शरतचन्द्र (झारखण्ड)
आचार्य दयासागर (राजस्थान)
आचार्य डॉ. सुदर्शनदेव व्रती (गु.हरिपुर)
हरीश बंसल (दुर्ग)
प्रहल्लाद प्रसाद आर्य (राजगांव)
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (दिल्ली)
माता परमेश्वरी देवी (प्रधाना)
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती (आचार्य)
डॉ. पूर्णसिंह डबास (वरिष्ठ संरक्षक)
राजेन्द्र जायसवाल (संरक्षक, कोलकाता)
मोहनलाल चड्ढा (भिलाई)
रवि आर्य (भिलाई)
माता सुशीला अदलखा (रायपुर)
सुरेश अग्रवाल (नवापारा)
अरक्षित शास्त्री (दिल्ली)
प्रफुल्ल कुमार साहू (धरमबांधा)
सदानन्द साहू(सरपंच)
ईश्वर साहू (आमसेना)
खिलेश्वर शास्त्री (जेंजरा)
रघुमणि प्रधान (रायपुर)
पूनमचन्द्र नागर (अहमदाबाद)
गोपालदास रावल (सम्बलपुर)
योगेन्द्र कुमार उपाध्याय (दिल्ली)
आचार्य राकेश कुमार (तुरंगा)
आचार्य जीवर्धन शास्त्री (बासवाड़ा)
राहुलदेव शास्त्री (कोलकाता)
सुधीर गुप्त (बिलासपुर)
जोगिराम आर्य (सलखिया)
विनोद जायसवाल (रायपुर)

न्यासीगण –

रुद्रसेन सिन्धु प्रधान गु.न्यास
सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान
आचार्य वीरेन्द्र कुमार मंत्री
आचार्य मनुदेव वाग्मी प्रबन्धक
आचार्य कोमल कुमार
अवनी भूषण पुरंग
घनश्याम अग्रवाल
माता मंजुलता अशफल्या
वीरसेन सिन्धु
व्रतपाल सिन्धु
विशिकेसन शास्त्री
तेजुराम अग्रवाल
राजेन्द्र धनखड़
सुनील भल्ला
कैलाश मरोदिया
पिंकी अग्रवाल

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड़, जिला-नुआपड़ा (ओड़िशा) 766109
www. vedicgurukulamsena.com E.Mail.gurukulamsena11@gmail.com
Mob- 9437070541/615, 7873111213, 9556228159

R.N.I. No. ORIHIN/2000/1876

P.R.No. Kalahandi/03/2016-2018